metadata, citation and similar papers at core.ac.uk
brought to you by CORE
provided by CMFRI Digital Repository

स्कोम्ब्रोइडस के विशेष प्रसंग में कालिकट की अपवाही जाल मात्स्यिकी

प्रस्तावना

कालिकट के बल्लायिल में अपवाही मात्स्यिकी के त्वरित विकास के साथ अनेक परिवर्तन भी हो रहे हैं। बाहरी यंत्रों के आगमन और तारली, बाँगडे आदि परंपरागत मछलियों की घटती, घीवरों को इस मात्स्यिकी की ओर आकृष्ट कर देते है। 1986-87 के उच्च मत्स्यन के महीनों में प्रतिदिन का औसत प्रचालन कभी भी 30 बार से अधिक नहीं पहूँचा था। लेकिन 1986-88 के उच्च मत्स्यन के महीनों में अपवाही जाल का औसत प्रचालन प्रतिदिन 50 से अधिक था। अपवाही जाल की पकड में मुख्य घटक होने के कारण स्कोम्ब्रोइडस मात्स्यिकी पर ध्यान देना आवश्यक है।

पकड सामग्री

अपवाही जाल, विविध मोटाई के नाइलोन सूत्र से बनाये जाते है। इनके जालाक्षियों का आकार 10 से 15 से.मी. के अन्तर में है। साधारणतथा इसकी लंबाई 600 मी. होती है और गहराई 10 मी.

आनाय

1984-85 में बाहरी यंत्रों को अधिक प्रचार मिला और अपवाही जालों के स्थानीय आनायों में इसका प्रयोग करने लगा। इन यंत्रों ने कम कीमत की फलक से निर्मित यानों का प्रयोग सुगम बना दिया। जब एक अच्छा नौका का दाम लगभग 60,000 रुपया है तब फलक से निर्मित यान जिसका स्थानीय नाम है "केट्टुवल्लम" सिर्फ 15,000 रुपये में मिलता है। इसके अलावा नौकाओं में बाहरी यन्त्रों का प्रयोग अपवाही जाल एकक में मानव शक्ति को घटा कर दिया है।

रिपोर्टर

टी.एम. योहन्नान और के.के. बालसुब्रह्मण्यन

सी एम एफ आर आइ कालिकट अनुसंधान केन्द्र, केरल

परिचालन

साधारणतया मत्स्यन यान 15.00 घण्टे को स्थलन केन्द्र से जाता है और 18.00 घण्टे को 35 मी. गहराई में पहूँचता है। सुरमई और ट्यूना मछलियों पर अधिक ध्यान देते हुए जाल 45 मिनटों में बिखेरकर रस्सी यान से बाँधता है। साधारतः 25 मीटर से अधिक लंबाई तक रस्सी नहीं छोड देती पर प्रक्षुब्ध मौसम में रस्सी अधिक लंबाई में छोड देती है। इसके बाद जाल 6 घण्टे तक बहने देता है। 06.00 घण्टे को अवतरण शुरू होता है। दिशा की जानकारी केलिए आजकल मछुए दिक्सूचक (compass) का उपयोग करते है।

पकड और पकड श्रम

1981-88 के दौरान वेल्लायिल में अपवाही जाल के 5,224 एककों के ज़रिए 624 टन मछली पकडी गयी। इसके

कालिकट में पाई गई सुरमई मछली

(54.65%) स्कोम्ब्रोइड जाति के ट्यूना, (30.03%) सुरमई, (23.39%) और बाँगडे (1.23%) आदि थी। इसके अलावा शिंगटियाँ पॉम्फ्रेटस, सुरा, रे, कंराजिडस आदि भी पकडी गयी थी। 1983-84 में, अपवाही जाल पकड में कमी नजर आई तो 1986-87 में 1,333 टन की भारी बढती हुई। 1984-85 में पकड श्रम काफी कम था। 1986-87 में शत प्रतिशत एकक यंत्रीकृत किया गया। 1985-86 की मुख्य पकड सुरमई भी और 1986-88 के दौरान अपवाही जाल की पकड में ट्यूना पहला आ गया। कुल पकड और पकड श्रम के साथ सीघा संबन्ध है। अपवाही जाल मात्स्यिकी में प्रयास बढाने से काफी अच्छा फल मिलने की संभावना है।

पकड और पकड श्रम में मौसमी अन्तर

अपवाही जाल मात्स्यिकी की उच्चतम पकड समय अक्तूबर है। ट्यूना एवं सुरमई का ज्यादा से ज्यादा पकड इस अवधि में मिलती है। दूसरी उच्चतम पकड अप्रैल में प्राप्त होती है। जुलई में मौसम काफी अच्छा होता हो और इसलीए पकड श्रम बढाता है। अप्रैल से जुलई तक और अक्तूबर से मार्च ट्यूना की बहुलता है।

मुख्य शब्द/Keywords

स्कोम्ब्रोइडस - scombroids
अपवाही जाल - drift net
सुरमई - seerfish
ट्यूना - tuna
बाँगडा - mackeral

कालिकट में ट्यूना मत्स्यन के लिए प्रचालन करनेवाले आऊटबोर्ड गिलनेट्टर्स